जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला

छठे भाग की विषय सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	प्रकरण पहला	
	लेखक की भूमिका	२
	गोम्मटसार-पीठिका (पं० टोडरमलजी कृत)	६
१	वीतराग विज्ञान मोक्षमार्ग प्रकाशक के आठ मगलाचरण का स्पष्टीकरण	५०
२	द्रव्य गुणो का स्वतन्त्र परिणमन	६०
३	जैनधर्म के विषयो मे शास्त्रो के प्रमाण	६३
४	अज्ञान की व्याख्या	६६
४	निश्चय सम्यक्त्व क्या है ?	६७
६	तत्व विचार की महिमा	६८
७	मिथ्यात्व ही आस्रव है और सम्यक्त्व ही सवर निर्जरा मोक्ष है	६९
८.	प्रयोजन और सब दु खो का मूल मिथ्यात्व	७०
९	भवितव्य	७२
१०	जीव स्वय नित्य ही है	७४
११	ससारी जीवो का सुख के लिए झूठा उपाय	७५
१२	बाह्य सामग्री से सुख-दु ख मानना भ्रम है	७७
१३	पुद्गलादि पर पदार्थों का कर्ता-हर्ता आत्म नही	७९
१४	इच्छा का प्रकार और दु ख क्या क्या है ?	८१
१५	परम कल्याण	८२
१६	प्रत्येक जीवात्मा ससार मोक्ष मे भिन्न-भिन्न है	८४
१७	जीव का सदैव कर्तव्य	८५
१८	सर्व उपदेश का तात्पर्य	८५
१९	सम्यग्दर्शन	८७
२०	जीव को सम्यक्त्व की प्राप्ति क्यो नही होती ?	९२

भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र

जयपुर

Founder : Astrology & Athrishta

क्रम	विषय	पृष्ठ
२१	वस्तु का परिणमन वाह्य कारणो से निरपेक्ष है	९३
२२	वासना का प्रकार	९५
२३	अन्तरग श्रद्धा और उसका फल केवलज्ञान	९७

प्रकरण दूसरा

१	जीव ज्ञान स्वभावी है,	९८
२	ज्ञान दर्शन जीव का लक्षण है	९८
३	क्या सयम और कपाय जीव का लक्षण नही कहा उसका क्या कारण है	९८
४	ज्ञानी यथार्थ वस्तु का प्रकाशक है	९८
५	जीव दु ख स्वभावी नही है	९८
६	सुख जीव का स्वभाव है	९८
७	द्रव्य कर्म जीव का कुछ करता है	९८
८	वस्तु का परिणमन जीव की इच्छानुसार नहीं होता	९९
९	सुख क्या है ?	१००
१०	केवल ज्ञान को अक्षर क्यो कहा है	१००
११	वस्तु का स्वरूप	१००
१२	मनुष्य सब गुणो को उत्पन्न करता हे	१००
१३	ज्ञानी को कर्म बँधता नही है	१००
१४	निश्चय चारित्र का अश ५ ६-७ गुणस्थान मे है	१०१
१५	सम्यक्त्व क्या है ?	१०१
१६	आध्यात्मिक भाव क्या है ?	१०१
१७	सम्यग्दर्शन सबका समान है	१०१
१८	सम्यग्दृष्टि का ज्ञान स्व पर विवेक वाला है	१०१
१९.	ज्ञान का कार्य क्या है ?	१०१
२०	अज्ञानी की दया क्या है ?	१०१
२१	सम्यक्त्व होने पर सन्मार्ग प्राप्त होता है	१०१

क्रम	विषय	पृष्ठ
२२	सम्यक्त्व बीज, सम्यक् मति-श्रुतज्ञान है	१०२
२३.	स्वभाव क्या है ?	१०२
२४.	उपादान कारण के आधीन कार्य होता है	१०२
२५	बन्ध कारण के प्रतिपक्षी का प्रमाण	१०२
२६	सयत के कितने गुणस्थान हैं ?	१०३
२७	त्रण मूढता	१०७
२८	तत्वज्ञान से परम श्रेय होता है	१०९
(अ)	द्वादशाग का नाम आत्मा है	१११
२९	क्या सम्यग्दर्शन सयम का अश है ?	११३

प्रकरण तीसरा

१.	सम्यक्त्व की व्याख्या	११४
२	सम्यक्त्व की उत्पत्ति ही मोक्ष का कारण है	११४
३.	सम्यक्त्व का प्रतिपक्षी मिथ्यात्व भाव है	११४
४	४ से १४वें गुणस्थान तक सम्यक्त्व समान है	११४
५.	सम्यक्त्व गुणी भूत श्रद्धा आत्मा स्वरूप की प्राप्ति	११४
६.	क्षायिक की अपेक्षा क्षायोपशमिक सम्यक्त्व सुलभ है	११४
७.	मिथ्यात्व आदि जीवत्व नही है, मगल तो जीव ही है	११४
८	सम्यक्त्व प्राप्त करने वालो ने सन्मार्ग ग्रहण किया है	११५
९.	सम्यक्त्व का फल निश्चयचारित्र है और निश्चयचारित्र का फल केवलज्ञान-सिद्धदशा है	११५
१०	मिथ्यात्व अनादि है इसलिए वह नित्य नही होता	११५
११	सम्यग्दृष्टि को श्रद्धा होती है अज्ञानी को श्रद्धा नही होती है	११५
१२	सम्यक्दृष्टि अबन्धक है	११५
१३	द्रव्यानुयोग और करणानुयोग का समन्वय	११६
१४.	श्री धवला मे अबन्ध का कथन क्या किया है ?	११६

Founder : Astrology & Athrishta

क्रम	विषय	पृष्ठ
१५	क्या सर्व सम्यग्दृष्टियो की स्वभावरूप अवस्था होती है	११६
१६	निश्चय सम्यक्त्व ४ से १४वें तक सर्व को समान है	११७
१७.	मेरु समानादि परमागम के अभ्यास से सम्यग्दर्शन	११७
१८	सम्यग्दर्शन रत्नगिरि का शिखर है	११७
१९.	सम्यग्दृष्टि शुद्ध है वही निर्वाण को प्राप्त होता है	११७
२०	श्रेष्ठतर उपदेश, जन्म-मरण का नाश करने वाला है	११७
२१.	धर्मों मे सम्यग्दर्शन अधिक है	११७
२२.	प्रथम श्रावक को क्या करना	११७
२३.	सम्यक्त्व अमूल्य मणी के समान है	११८
२४.	सम्यक्त्व का माहात्म्य	११८
२५.	सम्यग्दर्शन आत्मा मे स्थिति इसलिए आत्मा ही शरण है	११८
२६	आत्मा ही शरण है उसका क्या कारण है ?	११८
२७	आत्मा ही शरण है क्योंकि वह भूतार्थ है	११८
२८.	शुद्ध का क्या अर्थ है ?	११९
२९	आत्माश्रित निश्चय-पराश्रित व्यवहार	११९
३०.	पराश्रय बन्ध—आत्माश्रित-मोक्ष होता है	११९
३१.	क्या शुद्ध आत्मा ही दर्शन है ?	११९
३२.	शुद्ध आत्मा ही दर्शन है क्योकि वह आत्मा के आश्रय से है	१२०
३३.	जीव का स्वभाव एक देश रहने मे कोई विरोध नही	१२०
३४.	सम्यक्त्व प्रकृति का उदय होने पर जीव को गुणीभूत की श्रद्धा होती है	१२०
३५	तीनो सम्यक्त्व मे सम्यक्त्व का एकत्वपना है	१२०
३६.	क्षायोपशमिक क्षायिक की अपेक्षा सुलभ है	१२१
३७	ज्ञान सारभूत है उसकी अपेक्षा श्रद्धा सार है	१२१
३८.	सम्यक्त्व की महिमा क्योकि उससे ज्ञान की प्राप्ति होती है	१२१
३९.	चरणानुयोग मे सम्यक्त्व की महिमा	१२१

क्रम	विषय	पृष्ठ
४०	सम्यक्त्व की महिमा से कर्म नही बधता है	१२१
४१.	श्रद्धान का बल क्या है ?	१२२
४२.	तिर्यचो मे सम्यक्त्व समान है	१२२
४३	सम्यग्दर्शन अर्घ है	१२२
४४	सम्यग्दर्शन पूजा है	१२२
४५	सम्यग्दृष्टि नमस्कार के योग्य है	१२२
४६	सम्यग्दृष्टि कैसा जानना है	१२३

प्रकरण चौथा

१	निश्चय व्यवहार सम्यग्दर्शन का स्पष्टीकरण	१२३
२	साधक अन्तरात्मा को एक साथ साधक-बाधक है	१२४
३	भूमिकानुसार निश्चय व्यवहार की व्याख्या क्या है	१२५
४.	ज्ञानी के व्यवहार मे विपरीतपना नही होता है	१२५
५	व्यवहार सम्यग्दर्शन किसको होता है	१२६
६	व्यवहार सम्यक्त्व क्या है ?	१२६
७	व्यवहार मोक्षमार्ग क्या है ?	१२६
८	विपरीत अभिनिवेश रहित ही सम्यक्त्व है	१२७
९	प्रवचनसार गाथा १५७ मे निश्चय व्यवहार क्या है	१२७
१०	सम्यक्त्व चौथे से १४वे तक बतलाया है	१२८
११	सम्यग्दृष्टि का किसी समय अशुभभाव भी होता है उस समय व्यवहार सम्यक्त्व का क्या हुआ ?	१२८
१२	सातवें गुणस्थान के बाद व्यवहारसम्यक्त्व क्यो नही होता ?	१२९
१३	अन्तरात्मा बहिरात्मा परमात्मा का स्वरूप	१२९
१४	४-५-६ गुणस्थानो मे निश्चय के साथ व्यवहार होता है	१३०
१५	शुद्धनय के जानने से ही सम्यक्त्व होता है	१३०
१६	सम्यग्दर्शन प्राप्ति के बिना व्यवहार होता ही नही	१३०

Founder : Astrology & Athr

क्रम	विषय	पृष्ठ

प्रकरण पाँचवा

१.	धर्म का मूल क्या है ?	१३२
२	मनाक (अल्प) चारित्र धर्म है ?	१३५
३	धर्म की व्याख्या क्या-क्या है ?	१३७
४.	चारित्र की व्याख्या क्या-क्या है ?	१३८
५	मोक्ष	१४०
६	पुण्य अर्थात शुभभाव	१४२
७	सोह और अनुभव	१४५
८	आत्मा का अनुभव किस गुणस्थान मे होता है ?	१४६
९.	शुद्ध आत्मा मे ही प्रवृत्ति करना योग्य है	१४७
१०	राग के आलम्बन के विना वीतराग का मार्ग है	१४८
११	आत्महित के लिए प्रयोजन भूत का का क्या-क्या हैं	१४९
१२.	कभी सम्यग्दर्शनादि को वध का कारण और कही शुभभावो को—मोक्ष का कारण ऐसा क्यो ?	१५०
१३	व्यवहार मोक्षमार्ग कैसे प्राप्त किया जावे ?	१५१
१४	निश्चय-व्यवहार का साध्य-साधकपना किस प्रकार है	१५१
१५	द्रव्यलिगी को मोक्षमार्ग क्यो नही है ?	१५२
१६	द्रव्यलिगी को निश्चय रत्नत्रय प्रकट क्यो नही होता ?	१५२
१७	व्यवहार-निश्चय का सार	१५३

प्रकरण छठा

निश्चय-व्यवहारनयाभासावलम्बी का स्वरूप

	निश्चय-व्यवहार को समझने की क्या आवश्यकता है	१५४
१	निश्चय व्यवहार का स्पष्टीकरण	१५६
	स्थूल मिथ्यात्व, सूक्ष्म मिथ्यात्व क्या है ?	१५६
	निश्चय व्यवहार का लक्षण क्या है ?	१५६

क्रम	विषय	पृष्ठ
	यथार्थ का नाम निश्चय, उपचार का नाम व्यवहार को किस-किस प्रकार जानना चाहिए	१५६
	उभयाभासी किसे कहते है	१५६
	निश्चयाभासी किसे कहते है	१५६
	व्यवहाराभासी किसे कहते है	१६१
२.	वीतराग भाव ही मोक्षमार्ग है निमित्त व सहचारी इन दो का तात्पर्य क्या सम्यग्दर्शन दो प्रकार के हैं निम्चय-व्यवहार के विषय मे चरणा योग क्या बताता है	१६४ से १६८ तक
३	शुद्धि प्रगट करने योग्य उपादेय, अशुद्धि अश हेय है चौथे-पाँचवें, छठे मे हेय-उपादेयपना	१६८ से १७०
४	उभयभासी को खोटी मान्यता का स्पष्टीकरण शुद्धपने मे कितने अर्थ है।	१७० से १७६
५	तीसरी भूल का स्पष्टीकरण निश्चय का निश्चय-व्यवहार का व्यवहार श्रद्धान क्या है ? प्रवृत्ति मे नय का प्रयोजन नही है।	१७६ से १८६ तक
६	१३८ से १६२ तक के प्रश्नोत्तर याद करने योग्य प० जी ने निश्चय-व्यवहार के लिये क्या बताया है ? दूसरे आचार्यों ने निश्चय-व्यवहार क्या बताया है ? कुन्द कुन्द ने निश्चय-व्यवहार मे क्या बताया है	१८६ से १६६
७	सयोग रुप निश्चय-व्यवहार नौ बोलो मनुष्य जीव पर निश्चय-व्यवहार क्या है	१६६ से १६६ तक
८	सयोग रुप निश्चय-व्यवहार का विशेष स्पष्टीकरण	१६६ से २०६
६	कारण-कार्य का सात बोलो से	२०६ से २१० तक

der : Astrology & Athrishta

क्रम	विषय	पृष्ठ
१०	भेद-अभेद का स्पष्टीकरण	२१० से २१२ तक
११	भेद-अभेद नौ बोलो द्वारा स्पष्टीकरण ज्ञान वाला जीव है—निश्चय-व्यवहार	२१२ से २१६ तक
१२	भेद-अभेद का विशेष स्पष्टीकरण	२१६ से २२२ तक
१३	निश्चय व्यवहार मोक्षमार्ग का स्पष्टता चौथे-पांचवे-छठे मे निमित्ति-नैमित्तिक निश्चय-व्यवहार के विषय मे क्या बताया है	२२२ से २२९ तक
१४	निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग के नौ बोल	२३० से २३३ तक
१५.	मुनिपने पर निश्चय-व्यवहार	२३२ से २३९ तक
१६.	व्यवहारनय कार्यकारी कब ? उदासीनता का क्या अर्थ है	२३९ से २४६ तक
१७	मोक्षमार्ग पृष्ठ २५० से २५७ तक का विशेष व्रत-शीलादि ससार का ही कारण है शुद्ध-अशुद्ध भावो मे हेय उपादेयपना उभयाभासी का निश्चय रत्नत्रय क्या है उभयाभासी का व्यवहार रत्नत्रय क्या है शुभभावो के विषय मे कलश १०० से ११२ तक अवश्य जानने योग्य क्या है	२४६ से २६३ तक
१८	एकान्त व्यवहाराभासी के ११ प्रश्नोत्तर	२६३ से २६५ तक
१९	उभयाभासी की प्रवृत्ति का विशेषपना	२६५ से २८४ तक
	तीन प्रकार के निश्चय-व्यवहार क्या हैं	२८४
	पांच लब्धियाँ का प्रकरण सातवाँ	२८६ से २९४ तक
	क्षयोपशम लब्धि क्या है ?	
	विशुद्ध लब्धि क्या है ?	
	देशना लब्धि क्या है ?	

क्रम	विषय	पृष्ठ
	प्रायोग्य लब्धि क्या है ?	
	कारण लब्धि किसको होती है ?	
	अध करण क्या है ?	
	अपूर्व करण क्या है ?	
	अनिवृत्ति करण क्या है ?	
	कार्तिकेय स्वामी ने ३२१ व ३२२ मे क्या बताया है ?	२९४
	सामान्य विशेष से क्या सिद्ध होता है—	२९५
	द्रव्यदृष्टि का अभ्यास कर्तव्य है—	२९६
	आस्रवतत्व	२९७ से ३०० तक
	बधतत्व	३०० से ३०३ तक
	सबरतत्व	३०३ से ३०६ तक
	निर्जरातत्व	३०६ से ३०९ तक
	मोक्ष तत्व	३१० से ३१३ तक
	लघु द्रव्य सग्रह	३१४ से ३१८ तक
	(नेमी चन्द्र आचार्य देव कृत)	

—०—

Founder : Astrology & At